

08.09.17

भारतीय मानक ब्यूरो बनाम गुरुदीप व अन्य

प्रति हस्ताक्षर
प्रभारी अधिकारी प्रतिलिपी

अधिवक्ता परिवादी श्री अभिषेक अग्रवाल उपस्थित। अभियुक्त गुरुदीप व महेश सराधना ने न्यायालय में सरेण्डर किया। अभियुक्तगण को न्यायालय में सरेण्डर किया गया। अभियुक्तगण को धारा 11(1) ब्यूरो आफ इंडियन स्टेण्डर्स एक्ट 1986 का आरोप सारांश मौखिक रूप से सुनाया व समझा गया तो अभियुक्तगण ने स्वेच्छया लोक अदालत की भावना से प्रेरित होकर स्वेच्छया जुर्म स्वीकारोक्ति का आवेदन पेश किया। पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य व अभियुक्त की ओर से प्रस्तुत स्वेच्छया जुर्म स्वीकारोक्ति आवेदन को ध्यान में रखते हुए अभियुक्त को अपराध अर्न्तगत धारा 11(1) ब्यूरो आफ इंडियन स्टेण्डर्स एक्ट 1986 में दोषसिद्ध घोषित किया जाता है।

सजा के प्रश्न पर अभियुक्त की ओर से निवेदन रहा है कि अभियुक्तगण का यह प्रथम ही अपराध है वह ग्रामीण परिवेश का गरीब व्यक्ति है। परिवार में अकेले कमाने वाले हैं तथा अतः उन्हें परीविक्षा अधिनियम का लाभ दिया जावे। अभियोजन अधिकारी ने उक्त तर्कों का विरोध कर अभियुक्तगण को उचित दण्ड देने का निवेदन किया।

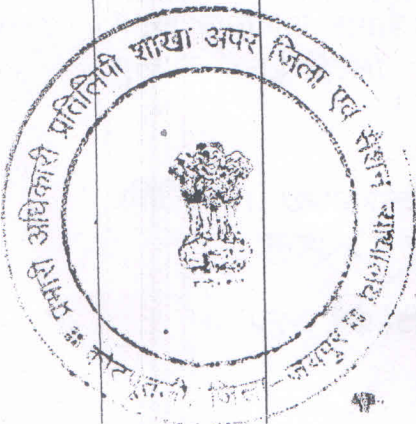
सजा के प्रश्न पर उभय पक्षों को सुनने व पत्रावली का ध्यानपूर्वक परिशीलन किये जाने के उपरांत यह सही है कि अभियुक्तगण पूर्व में दोषसिद्ध नहीं है लिहाजा अभियुक्तगण का यह प्रथम ही अपराध है। अभियुक्तगण ग्रामीण परिवेश के हैं। अतः तथ्यों एवं परिस्थितियों को देखते हुए अभियुक्तगण को अपराधी परीविक्षा अधिनियम का लाभ दिया जाना न्यायोचित प्रतीत नहीं होता है।

परिणामतः अभियुक्त गुरुदीप पुत्र मुन्नालाल व महेश सराधना पुत्र छाजूराम गुर्जर निवासी कोटपूतली जिला जयपुर को धारा 11(1) ब्यूरो आफ इंडियन स्टेण्डर्स एक्ट 1986 के अपराध की दोषसिद्धि में अभियुक्तगण को न्यायालय उठने तक की सजा व पांच-पांच हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया जाता है।

अभियुक्तगण की ओर से अर्थ दण्ड के रूप में राशि दस हजार रुपये जरिये रसीद संख्या 31/081304 दिनांक 08.09.17 जमा करवाई गई। पत्रावली फैसल शुमार होकर बाद तकमील दाखिल दफतर हो।

(श्रीमती दीक्षा सूद)

अतिरिक्त मुख्य अधिवक्ता नजिबुल्लाह,
कोटपूतली, जिला-जयपुर।



प्रमाणित प्रतिलिपी

मुख्य प्रतिलिपिक
अपर जिला एवं सेशन न्यायालय
कोटपूतली, जिला-जयपुर

(गुरुदीप)